पाठ 16. पुस्तक-कीट

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ कोई विषय या पाठ रटने के स्थान पर समझकर सीखने के विद्यार्जन के सही तरीके को बच्चों को बताने-सिखाने के उद्देश्य हेतु दिया गया है। इस पाठ द्वारा बच्चे यह भी जान पाएँगे कि इस प्रकार रटकर याद किया पाठ मन में क्षणिक देर तक ही बना रहता है लेकिन भली प्रकार समझा हुआ विषय व्यक्ति के विषय ज्ञान को और भी मज़बूत बनाता जाता है।

पाठ का सारांश

कुसुम तथा लता मालती को हॉल में चलने के लिए कहती हैं। हॉल में सभी लड़कियाँ एकत्रित होती हैं। सुलेखा अपनी सहेली निर्मला के बारे में अध्यापिकाओं को बताती है कि निर्मला रात-दिन पढ़ाई में लगी रहती है, जिससे उसका स्वास्थ्य लगातार गिरता जा रहा है। वह हर समय अपने विषयों के पाठों को रटती रहती है। खाने-पीने, खेलकूद तथा घूमने-फिरने पर बिलकुल भी ध्यान नहीं देती। अध्यापिका निर्मला से जितने भी सवाल पूछती हैं, वह उनके सभी जवाब गलत ही देती है। अध्यापिका निर्मला को समझाती हैं कि इस प्रकार रटने के कारण तुम कुछ भी नहीं सीख पाई हो। पढ़ने-समझने का अर्थ केवल पाठ रटना नहीं होता। वे उससे कहती हैं कि उसे प्रतिदिन कुछ समय खेलने और घूमने के लिए निकालना होगा जिससे उसका शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहेंगे।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पाठ से मिलने वाले संदेश पर चर्चा करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- क्या तुम भी निर्मला की तरह पाठ समझने की बजाए रटने में विश्वास रखते हो?
- प्राचीन शिक्षा पद्धति के बारे में तुम क्या जानते हो?
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा प्राचीन शिक्षा पद्धति में क्या समानताएँ एवं भिन्नताएँ हैं?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।